श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान

या समै हरदास जी, एक दिन नीको ठहराय कर ।
कह्या बाल मुकुन्दजी पधरावो, तुम सेवो अपने घर ॥१॥

इस प्रसंग से हरदास जी ने शुभ मुहूर्त देख कर बाल मुकुन्द की मूर्ति पधराने के लिए एक दिन निश्चित किया और कहा हे देवचन्द्र जी ! इनको अपने घर पधरा कर तुम सेवा करो ।

ता दिन जो देखे सेवा में, समय प्रातः काल के ।
सरूप तो देखे नहीं, तब लगे तहां ढूंढ़ने ॥२॥

जो दिन निश्चित किया था उस दिन प्रातःकाल उठ कर जब हरदास जी मंदिर में गए तो बाल मुकुन्द की मूर्ति वहां न देख कर ढूंढ़ने लगे ।

सरूप कहूं न पावहीं, भए हरिदास जी दिलगीर ।
सिंहासन सेज्या पर, पावे नहीं क्यों ए कर ॥३॥

हरदास जी ने बालमुकुन्द की मूर्ति को सिंहासन, सेज्या और मंदिर में सब स्थानों पर भली भाँति ढूँढा पर वहां बाल मुकुन्द की मूर्ति थी ही नहीं तो कहां से मिलती ।

लगे पूछने घर में, इहां तो कोई आया नाहें ।
तब जवाब तिनने दिया, इहां किन की ताकत जो आये ॥४॥

तब हरदास जी ने घर वालों से पूछा कि मंदिर में कौन आया था । बालमुकुन्द जी की मूर्ति नहीं है तो घर वालों ने उत्तर दिया कि निज मंदिर में आने की किसकी ताकत है ।

हरिदास जी विस्मय भये, सेवा बिहारी जी की कर ।
बाल मुकुन्द जी को ढूंढ़त फिरत, पस हुए यों कर ॥५॥

हरिदास जी चकित होकर बाल मुकुन्द जी की मूर्ति को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते हैरान हो गए तब थक कर आखिर बांके बिहारी की सेवा की और बैठ गए।

इन समें आये पहुंचे, श्री देवचन्द्र जी घर से ।
यह हकीकत सुन के, दिलगीर हुए मन में ॥६॥

इतने में श्री देवचन्द्र जी जब अपने घर से मंदिर में आए तो बाल मुकुन्द की मूर्ति की हकीकत सुन कर उन का मन बहुत दुःखी हुआ ।

Nijanand App

और हरिदास जी सों, लगे बातें करने ।
यह चिन्ता तुम जिन करो, भई चूक हमसें ॥७॥

तब देवचन्द्र जी ने हरिदास जी से कहा कि हे गुरूदेव ! चिन्ता मत कीजिए । मेरे अंदर कोई कमी थी जिस कारण से भगवान अदृश्य हो गए हैं ।

तुम तो हम को दे चुके, वस्त आई थी हम पास ।
एह हमारी भूल है, जो टूटी हमारी आस ॥८॥

हे गुरूदेव ! आप तो हमें वचनों द्वारा ही बालमुकुन्द की मूर्ति दे चुके थे । आपकी ओर से वह हमें मिल चुकी और मेरी किसी कमी के कारण से आज मेरी आस टूटी है । यदि उस पर दुःख मनाता हूं तो मेरी भूल है ।

हरिदास जी मानें नहीं, प्रसाद न लेऊं लगार ।
जब मैं दर्सन करों, तब मोहे होय करार ॥९॥

इस प्रकार के उत्तम गुरू भक्ति के भावों को सुनकर हरिदास जी को सन्तुष्टि नहीं हुई और प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक बाल मुकुन्द जी साक्षात् दर्शन नही देंगे तब तक न तो अन्न जल गृहण करूंगा और न ही मेरे मन को शान्ति होगी ।

बिहारी जी को आरोगाए, दोउ बाल भोग राज भोग ।
आरोगने बाल गोपाल को, कर दियो संजोग ॥१०॥

बांके बिहारी जी को प्रातः का बाल भोग और दोपहर का राजभोग आरोगाया पर स्वयं हरदास जी ने भोजन ग्रहण नहीं किया और घर में बाल-बच्चों को आरोगने की सब व्यवस्था कर दी ।

घर में सब लोगों ने, और हरिदास जी नें ।
करने लगे सब एकादसी, श्री देवचन्द्र जी तिन समें ॥११॥

सब घर वालों ने और हरिदास जी ने भोजन नही लिया मानो एकादशी का ही व्रत हो गया हो । उस दिन श्री देवचन्द्र जी ने भी ऐसा ही किया ।

प्रसाद न लियो घर में, भयो वितीत दिन ।
इहाँ हरिदास जी बैठे रहे, दुख पाया अति मन ॥१२॥

देवचन्द्र जी घर में तो गए पर घर में भी उन्होंने प्रसाद ग्रहण नहीं किया । सारा दिन उपवास में बीत गया । हरदास जी निज मंदिर में ज्यों के त्यों दुःखी मन से बैठे रहे ।

Nijanand App

यों करते मध्य रात, भई वितीत जब ।
हरिदास जी बैठे हते, कछु आंख मिची तब ॥१३॥

दुःखी मन से आराधना करते हुए जब मध्य रात्रि व्यतीत हो गई तब हरिदास जी कुछ जाग्रत और कुछ निद्रावस्था में आए थे कि -

तहां आये बालमुकुन्द जी, साक्षात दियो दर्सन ।
अहो प्रभुजी कहां गए हते, हम ढूंढत कलपे मन ॥१४॥

गोलोक से साक्षात् बाल मुकुन्द ने आकर दर्शन दिए तब हरिदास जी चौंक कर बोले- ओहो, प्रभु जी ! आपको तो ढूंढते-२ मेरा मन अति दुखी हो गया था । आप कहाँ चले गए थे ?

कह्या हम तो उतहीं बैंठे हते, तो तुम क्यों न दियो दीदार ।
कही तुम मोको पधरावते थे, श्री देवचन्द्र जी के द्वार ॥१५॥

तब बाल मुकुन्द जी बोले कि हम साक्षात् मंदिर में ही थे तो हरिदास जी बोले कि यदि आप मंदिर में थे तो दर्शन क्यों नहीं दिये तब बाल मुकुन्द जी ने उत्तर दिया तुम मुझको देवचन्द्र जी के घर पधरा रहे थे इस कारण से मैं अदृश्य हो गया था ।

सो तुमको इन सरूप की, भई नहीं पहिचान ।
मैं इनकी सेवा न सह सकों, ना सह सकों अहसान ॥१६॥

हे हरिदास जी ! तुमने इनको बाहर के रूप से ही शिष्य बनाकर सेवा करवायी है । इनके अन्दर विराजमान श्यामा जी के स्वरूप को नहीं पहचानते हो । उन्होंने अपने धनी अक्षरातीत के साथ बृज में ११ साल ५२ दिन तक लीला की थी । अक्षरातीत पारब्रह्म ने मेरे ही तन में बैठकर लीला की थी, जिसके बदले में उन्होंने मुझे भव से पार करके गोलोक में अखण्ड कर दिया है । मैं तो इनके अहसान का बदला ही नहीं चुका सकता तो इनसे सेवा कैसे करा सकता हूं ।

जो दिलगीर होय श्री देवचन्द्र जी, एह बात सुन के ।
तो वस्तर सेवा दीजियो, तुम मोहे न दीजो इनें ॥१७॥

यदि इस बात को सुनकर श्री देवचन्द्र जी दुःखी हों तो बांके बिहारी के वस्त्रों की सेवा उन्हें दे देना क्योंकि नित्य वृन्दावन में बांके बिहारी के तन में अक्षरातीत पारब्रह्म ने किशोर लीला की थी और आज भी वह तन अखण्ड है इसलिए उनके वस्त्रों की सेवा देवचन्द्र जी को दे देना पर दोबारा मेरी मूर्ति देवचन्द्र जी को देने का नाम मत लेना ।

Nijanand App

अब प्रभु जी तुम कहा हो, कही मैं बैठो वाही ठौर ।
यों करते आंख खुल गई, भड़क उठे यों कर ॥१८॥

तब हरिदास जी बोले कि हे प्रभु जी ! इस समय आप कहाँ हैं ? तो बाल मुकुन्द जी ने उत्तर दिया कि मैं ज्यों का त्यों मंदिर मे बैठा हूं । इस बात को सुनकर एकदम आँखें खुल गई और चौंक कर उठे।

जो अन्दर आए के देखहीं, तो बालमुकुन्द बैठे सिंहासन ।
फरि - फरि चरणों लगे, प्रफुल्लित हुआ मन ॥१९॥

जैसे ही मंदिर का किवाड़ खोला तो बाल मुकुन्द जी की मूर्ति ज्यों की त्यों सिंहासन पर विराजमान देखी । फेर-फेर उनके चरणों में प्रणाम किया जिससे उनका मन प्रसन्न हो गया ।

हरिदास जी घर से चले, देऊं खबर श्री देवचन्द्र जी को ।
भई खुसाली दीदार की, मिले सामे बाजार मों ॥२०॥

तब हरिदास जी ने सोचा कि बाल मुकुन्द जी के साक्षात् दर्शन देना और मूर्ति के मिल जाने की शुभ सूचना देवचन्द्र जी को भी दे दूं । सूचना देने जा ही रहे थे कि सामने से देवचन्द्र जी आते दिखाई दिये।

हरिदास जी दौड़ उतावले, सीस नमाया चरन ।
कही हरिदास जी कहा करत हो, हाथों उठाया तिन ॥२१॥

अब हरिदास जी को देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान हो गयी थी जिसके कारण से दौड़ कर उन्होंने देवचन्द्र जी के चरणों पर अपना शीश रख दिया । तब देवचन्द्र जी दुःखी हो कर बोले कि हे गुरू देव जी! ये क्या कर रहे हो । श्री देवचन्द्र जी ने अपने हाथों से ही उनको उठाया ।

कह्या ए श्री देवचन्द्र जी, कहा खबर कहों मैं तुम ।
कही तुमारे सरूप की, पहिचान नहीं हम ॥२२॥

तब हरदास जी बोले कि हे देवचन्द्र जी ! आज दिन तक मैं आपके स्वरूप की पहचान नहीं कर सका आप के अन्दर विराजे उस स्वरूप की महिमा मैं आपको कैसे सुनाऊं ।

आज दिन लगे हम सेवते, कबहूं दरस नाहीं साक्षात ।
सो सरूप बालमुकुन्द जी, मोसों करी विख्यात ॥२३॥

दूसरा आज दिन तक मुझे बाल मुकुन्द जी की सेवा करते-करते वर्षो बीत गये पर बाल मुकुन्द के साक्षात् दर्शन कभी नहीं हुए । आप के स्वरूप की पहचान कराने के कारण से ही बाल मुकुन्द ने साक्षात् गोलोक से पधार कर दर्शन दिए और आपके स्वरूप की पहचान की कुल हकीकत उन्होंने ही मुझे बताई है ।

Nijanand App

सो तुमारे सरूप की, पहिचान कर दई ।
तुम इनको जानत नहीं, मोहे ऐसी बात कही ॥२४॥

उन्होंने ही मुझे बताया है कि आप परमधाम के पारब्रह्म के आनन्द रूप श्यामा महारानी हो और ये भी मुझे कहा कि हे हरिदास जी ! तुम देवचन्द्र जी के स्वरूप को नहीं पहचानते हो ।

और मेरी सेवा करन को, इन्हें देवो तुम जिन ।
जो होय श्री देवचन्द्र जी दिलगीर, तो दीजो वस्तर सेवन ॥२५॥

और बाल मुकुन्द जी ने यह आदेश दिया कि मेरी मूर्ति की सेवा करने के लिए देवचन्द्र जी को नहीं देना । इस बात को सुन कर यदि वे दुःखी हो तो उनको बांके बिहारी जी के वस्त्रों की सेवा दे देना ।

तब पूछा श्री देवचन्द्र जी, पाए बालमुकुन्द तुम ।
तब कह्या हरिदास जी ने, चलो दर्सन करावें हम ॥२६॥

तब देवचन्द्र जी ने पूछा कि हे गुरू देव ! क्या हकीकत में आप को बाल मुकुन्द की मूर्ति प्राप्त हो गई है ? तब हरिदास जी ने उत्तर दिया कि बाल मुकुन्द जी की मूर्ति साक्षात् सिंहासन पर विराजमान है । चलो हम आपको दर्शन करायें ।

दोऊ जने बातें करते, खुसाल होय के मन ।
आये हरिदास जी के घरों, मगन होय रोसन ॥२७॥

वहां से दोनों अति प्रसन्नता के साथ मिल कर हरिदास जी के घर पधारे और बाल मुकुन्द जी की मूर्ति के दर्शन सिंहासन पर करके अति मग्न हो गये ।

दोऊ जने दीदार करके, लिया प्रसाद जो इत ।
सब घर के लोगों लिया, हुआ प्राप्त बखत ॥२८॥

बाल मुकुन्द जी की मूर्ति के दर्शन करने के पश्चात् दोनों ने भोजन लिया । तब सब घर वालों ने भी भोजन किया इतने में प्रातः काल हो गया ।

इन विध भोजनगर में, भई के भांत बीतक ।
ताकी एक भांत तुम सों कही, है बात बड़ी बुजरक ॥२९॥

इस प्रकार के कई प्रसंग भोजनगर में रहते हुए देवचन्द्र के जीवन में आए । उन सब में यह सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग है । वह मैंने आपको सुनाया है ।

Nijanand App

जामा बांके बिहारी जी का, दिया सेवने को ।
श्री देवचन्द्र जी सिर चढ़ाय के, ल्याए अपने घर मों ॥३०॥

इसके पश्चात् हरिदास जी ने देवचन्द्र जी को बांके बिहारी जी का वागा वस्त्र, मोर मुकुट और बांसुरी सेवा के लिए दी । देवचन्द्र जी महाराज उस बस्त्रों की सेवा को पालकी में पधरा कर घर ले आये ।

तहां जाय एक ठौर को, बनाई नीके कर ।
बासन सेज सिंहासन, तहां पधराये वस्तर ॥३१॥

तव अपने घर में एक जगह अति सुन्दर ढंग से जा कर उस सिंहासन पर वस्त्रों की सेवा पधराई ।

लगे सेवा करने तिनकी, आप अपने अंग सों ।
चौका पानी रसोई, देह पछाड़े इन मों ॥३२॥

अव बांके बिहारी को अपना पति मान कर और अपने आप को गोपी मानकर सेवा करने लगे । इस प्रकार उनका सारा दिन व्यतीत हो जाता था ।

जल भर ल्यावें सिर पर, जो काहू की परछाई परे तिन पर ।
तो फेर ल्यावें और जल, सेवा करें यों कर ॥३३॥

यदि जल भर कर ले आते समय रास्ते में किसी की परछाई पड़ जाती थी तो जल गिरा कर और जल लाते थे । इतने पवित्र भाव से सेवा करते थे ।

रसोई करें विवेक सों, सेवा को सब साज ।
सेवा में चितवन रहे, मोको ए वस्त करनी आज ॥३४॥

रसोई बनाते समय बहुत ही पवित्रता और स्वच्छता का ध्यान रखते थे । इस प्रकार भोग बनाकर उन वस्त्रों की सेवा के सामने ही भोग का थाल रख देते थे और चितवनी में नित्य वृन्दावन का ध्यान करते थे और सेवा के लिए हर प्रकार की वस्तु पहले से ही लाकर रख लेते थे ।

चावल मूंग घीऊ खाड, कर जुदा श्री राज के काज ।
अपने वास्ते उतरती, जुदा बनावें साज ॥३५॥

अपने प्रियतम प्यारे को भोग लगाने के लिए, उत्तम रसोई बनाने के लिए चावल, मूंग, घी, खांड इत्यादि का प्रयोग करते थे परन्तु स्वयं जो घर में रूखा-सूखा बनता था, वही आरोग लेते थे ।

और रसोई विवेक सों, करे नीके कर ।
आकार को प्रवाह ज्यों, पालत हैं यों कर ॥३६॥

रसोई को पवित्रता और स्वच्छता के भाव से बनाते थे । इस सेवा के नियम का पालन करने के लिए अपनी देह की कभी भी परवाह नहीं करते थे ।

Nijanand App

जब इन भांत सेवा करें, लगे लीलबाई को लोग कहने ।
तुम ऐसी स्त्री हो घर में, श्री देवचन्द्र जी मेहनत करे हाथों से ॥३७॥

इस प्रकार जब देवचन्द्र जी अपने हाथों से रसोई बनाने का कार्य करते थे तब गली-मोहल्ले की सब स्त्रियां लीलबाई जी को, जो श्री देवचन्द्र जी की धर्म-पत्नी थी, ताने मारने लगीं कि तुम ऐसी स्त्री हो कि देवचन्द्र जी को अपने हाथों से रसोई का सब कार्य करना पड़ता है ।

तुम क्यों रसोई न करो, जल क्यों न भर ल्यावो तेह ।
तुम चौका क्यों न देवत, चाहिए सेवा तुमको येह ॥३८॥

लीलबाई जी ! तुम अपने हाथों से रसोई क्यों नहीं बनाती हो और जल भर के क्यो नही लाती हो? तुम चौका बर्तन क्यों नहीं करती हो ? यह कार्य तुमको करना चाहिए जो देवचन्द्र जी करते हैं । यह कार्य पत्नी का है न कि पति का ।

तब इत लीलबाई नें, करी आय के अरज ।
सब मोकों ताना मारत, करों सेवा अपनी गरज ॥३९॥

तब श्री लीलबाई जी ने परेशान होकर अपने पति श्री देवचन्द्र जी से प्रार्थना की कि हे पतिदेव ! रसोई बनानें का सब कार्य पत्नी का होता है । कृपया यह सेवा मुझे ही करने दो । मोहल्ले की सब स्त्रियां मुझे ताना मारती हैं ।

तब श्री देवचन्द्र जी ऐं कह्या, नाहीं तेरो ए काम ।
कबहूं तेरो चित दुखायगो, जल भरते इस ठाम ॥४०॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि यह रसोई का कार्य तुम्हारा काम नही है । यह सेवा का कार्य है । इसको करते समय या जल को भरते समय कहीं आप का दिल दुःख गया तो वह सेवा नहीं होगी ।

या और टहल करते दुखाय, तोको नहीं पहिचान ।
तब सेवा-धरम कहाँ रह्यो, ना होय मेरे समान ॥४१॥

क्योंकि सेवा तो भाव से होती है और भाव तब आता है जब स्वरूप की पहचान होती है । तुमको बांके बिहारी जी के स्वरूप की पहचान नहीं है इसलिए यदि सेवा करते समय तुम्हारा मन दुःख गया तो फिर वह सेवा-धर्म कहां रहेगा और मुझे तो स्वरूप की पहचान है इसलिए तुम मेरे समान सेवा नहीं कर पाओगी ।

देऊं नहीं तिस वास्ते, मैं करों अपने अंग ।
है मेरो प्रेम सरूप सों, तामें होवे भंग ॥४२॥

जिस प्रकार तुम मेरी धर्म पत्नी होने के कारण मेरी सेवा करना चाहती हो उसी प्रकार वह स्वरूप मेरी आत्मा का धनी है और मेरा उनसे जो प्रेम है इस कारण से वह सेवा मुझे ही करनी चाहिए । यदि वह सेवा में तुम्हें दे देता हूँ तो मेरे प्रेम में कमी आ जायेगी ।

Nijanand App

सेवा करने न दई, सब करें अपने हाथ ।
हमेसा चितवन करें, रहें सेवा के साथ ॥४३॥

इस कारण से श्री देवचन्द्र जी ने सेवा लीलबाई को (धर्मपत्नी को) नहीं दी और स्वयं करते रहे और सेवा करते समय हमेशा चितवन वृन्दावन का ही करते थे ।

इन भांत एक दिन, हुआ ध्यान में दरसन ।
जाने हम ब्रज में गए, द्वार नन्द के रोसन ॥४४॥

इस प्रकार करते करते एक दिन भोग लगा रहे थे और चितवनी जब वृन्दावन की कर रहे थे तो क्या देखा कि मैं राधिका के रूप में अखंड गोकुल में पहुंच गई हूं और नन्द के द्वार पर खड़ी हूं ।

जहां जसोदा जी बैठी थी, ऊपर मांची के ।
देखे दूध उटावते, टहेल करावते एह ॥४५॥

तो देवचन्द जी ने राधिका के रूप में क्या देखा कि नंद जी के आंगन में मांची (खाट) पर यशोदा जी बैठी हैं । और दूध उबाल रही हैं और दासियां उनकी सेवा कर रही हैं ।

तहां आप श्री देवचन्द्र जी, ठाढे भये जब जाये ।
कहे आई जी आवो श्री देवचन्द्र जी, मन में महा सुख पाये ॥४६॥

जैसे ही आप वहां जाकर खड़े हुए तो यशोदा जी ने कहा कि आओ बहूरानी आओ ! यह सुन कर देवचन्द्र जी मन में बहुत प्रसन्न हुए ।

जसोदा जी कहें तुम आरोगो, श्री देवचन्द्र जी इत ।
तब पूछा श्री देवचन्द्र जी ने, श्री कृष्ण जी हैं कित ॥४७॥

जैसे ही देवचन्द्र जी आंगन में गए तो यशोदा जी ने आरोगने का आदर किया और कहा-हे देवचन्द्र जी ! तुम आरोगो । तब देवचन्द्र जी ने पूछा श्री कृष्ण जी कहां हैं ।

हैं कहां श्री कृष्ण जी, मैं करों दरसन ।
कही गये बन में खेलने, कह्या है उत मेरा मन ॥४८॥

हे यशोदा मैया ! श्री कृष्ण जी कहां है ? मुझे उनके दर्शन करने हैं तो यशोदा मैया ने उत्तर दिया कि वह बन में खेलने गए हैं । तब देवचन्द्र जी बोले मेरा मन उनके चरणों में लगा है । मैं उनका दर्शन करना चाहता हूं ।

Nijanand App

मिटाई घर में से मंगाय के, दई श्री देवचन्द्र जी के हाथ ।
उहाँइ जाय के आरोगियो, दोऊ मिलके साथ ॥४९॥

तब यशोदा मैया ने घर से मिठाई मंगाकर देवचन्द्र जी को दी और कहा कि यह मिठाई साथ ले जाओ और दोनों मिलकर आरोग लेना ।

तहां आप श्री देवचन्द्र जी, चले तरफ जहां बन ।
तहां बाल गोपाल खेलते, कहां श्री कृष्ण जी पूछा तिन ॥५०॥

तब देवचन्द्र जी उस मिठाई को लेकर वन की तरफ चले । वन में बाल-गोपाल खेल रहे थे । उनसे पूछा कि श्री कृष्ण जी कहाँ हैं ?

कहा कौन श्री कृष्ण जी तुम कहो, खेले टोले टोले लड़के ।
कृष्णजी नाम बहुतन का, कहा बेटा नन्द जी का जे ॥५१॥

तब उन ग्वाल बालो ने उत्तर दिया कि तुम किस श्री कृष्ण को पूछते हो? श्री कृष्ण नाम तो बहुतों का है तब श्री देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि जो नन्द जी के सुपुत्र हैं ।

नन्द के बेटे कृष्ण जी, इहां बहुत रहत ।
तुम किन को कहत हो, कहा जसोदा बेटा इत ॥५२॥

तब फिर ग्वाल बालो ने कहा कि यहां बहुत ग्वाल बालों का नाम कृष्ण है और उनमें से कइयों के पिता का नाम नन्द बाबा है । तब देवचन्द्र जी ने कहा कि जिनकी माता का नाम यशोदा है ।

बुलाय लिये देवचन्द्र जी, बैठाए अपने पास ।
बातें लगे करने, मुख मीठे प्रेम लिये खास ॥५३॥

तब स्वयं श्री राज जी महाराज ही बाल मुकुन्द के रूप में आकर देवचन्द्र जी को अपने पास बुलाकर बैठा लेते हैं और मन में अति प्रेम लेकर मीठी-२ बातें करने लगे ।

इन समै इत घूंघरी, पकाई भोजन मों ।
छेड़े दोऊ छटके लै रूमाल, पानी निकालने तिन सों ॥५४॥

आज इनकी मंडली में ग्वाल-बाल घुघरी बना रहे थे और घुघरी का पानी निकालने के लिए कपड़े से छान रहे थे ।

Nijanand App

श्री देवचन्द्रजी मिठाई, जो ल्याए थे नन्द घर से ।
तिनको ले आगे धरी, दई लड़कों को बांटने ॥५५॥

देवचन्द्र जी ने वह मिठाई,जो यशोदा मैया ने दी थी उनके सामने रख दी । तब श्री कृष्ण जी ने मिठाई लड़को को बांटने के लिए दे दी और कहा हमें आज दो भाग देना ।

कह्या श्री कृष्ण जी ए बांट दयो, देवो हमको दो बांटे के ।
दिये उन लड़कों इन्हें, दोय भाग जो इनके ॥५६॥

श्री कृष्ण जी ने कहा इसे सबको बांट दो और हमारे पत्तल में दो-दो भाग रख देना । तब ग्वालो ने हर वस्तु के दो-दो भाग परोस दिए ।

और सामा सब के, हिस्से दिये दोय ।
श्री देवचन्द्र जी आप आरोगे, फेर ध्यान से चौंके सोय ॥५७॥

जब हर वस्तु के दो-दो भाग ले लिए तब देवचन्द्र जी से आरोगने को कहा । अब जैसे ही उन्होंने लाड़-प्यार में आकर आरोगने के लिए हाथ उठाया तो यह भूल चुके थे कि मैं चितवनी कर रहा हूं और जब उनका हाथ धरती पर लगा तो चितवनी टूट गई ।

तब इनका विचार करके, तहकीक किया मन में ।
हमारा खावन्द एही है, चित्त बांधा इन सरूप से ॥५८॥

तब इसी स्वरूप को मन में निश्चय कर लिया कि यही मेरे आतम के पति हैं और मैं इनकी पत्नी राधिका हूं।

अरूगावन लगे इनको, दिल में कर विस्वास ।
दिल में ए ही उपजी, ब्रजलीला की रही आस ॥५९॥

अब नित्य प्रति दृढ़ विश्वास के साथ इन्ही स्वरूप को आरोगाने लगे, और अखंड ब्रज लीला क्या है इसको समझने की तमन्ना जाग्रत हो गई ।

कोइक दिन इन भांति सों, हुआ है गुजरान ।
इन भांत कई विध की, कहा लों कहों पहिचान ॥६०॥

कुछ दिन इसी तरह व्यतीत हो गए और नित्य प्रति इसी स्वरूप की चितवनी करते रहे । इस प्रकार की अनेक घटनायें हुई जिनके विषय मे मैं कहा तक कहूं ।

Nijanand App

महामति कहे ए साथ जी, ए इत के कहे बयान ।
श्री देवचन्द जी के सरूप की, नेक कहों पहिचान ॥६१॥

आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि प्यारे सुन्दर साथ जी यह हकीकत भोजनगर की कही है । जिससे श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की कुछ पहचान कराई है ।

(प्रकरण ४, चौपाई २५३)

अब इहां से आये, बीच हलार देस ।
तहां नौतन पुरी मिने, बहुत जमा भये खेस ॥१॥

तब ये भाव लेकर देवचन्द्र जी हरदास जी के पास गए और अखंड ब्रज गोकुल की लीला के बारे में पूछा तो हरिदास जी ने कहा- आपको कोई भी बिना हमारे आचार्य श्री के समझा नहीं सकेगा इसलिए तुम नौतनपुरी हलार देश जाकर श्याम जी के मंदिर में कान जी भट्‌ट, जो राधा वल्लभी मार्ग के आचार्य हैं उनसे श्री मद्‌भागवत की चर्चा सुनो तो आप को अखंड ब्रज गोकुल और नित्य वृन्दावन के सब भेदों का ज्ञान हो जायेगा । नवतनपुरी में श्री देवचन्द जी के और कुटुम्ब परिवार के लोग रहते थे ।

इत माँ बाप आये रहे, उत वल्लभी मार्ग रहे जोर ।
तिन सेती रबद रहे, वे करने लगे सोर ॥२॥

श्री देवचन्द्र जी महाराज अपने माता-पिता, धर्म पत्नी एवं पुत्र बिहारी जी और कन्या यमुना बाई को साथ ला कर कुल परिवार सहित नौतनपुरी में बस गये (रहने लगे) । नौतन पुरी में राधा वल्लभी मार्ग की मूल गादी होने के कारण से इसका अधिक प्रचार था । इसलिए जब देवचन्द्र जी उन लोगों से अखण्ड गौलोक और श्री कृष्ण के दो स्वरूप, बाल मुकुन्द और बांके बिहारी जी का वर्णन करते थे तो वल्लभाचार्य के मार्ग के अनुयायियों से खटपट रहती थी और श्री कृष्ण के दो स्वरूप सुन कर लड़ने लगते थे ।

स्याम जी के देवल में, कथा कहे कान जी भट ।
निस्टा ले सुनने लगे, होय बल्लभियों से खटपट ॥३॥

अब देवचन्द्र जी महाराज स्याम जी के मन्दिर में जहां कान जी भट्‌ट श्री मद्‌भागवत की नित्य प्रति चर्चा सुनाते थे, वहां नेष्टाबन्ध होकर भागवत सुनने लगे । किसी न किसी विषय पर वल्लभियों से खटपट होती रहती थी ।

जलपान को तब करें, जब आहार देवें आतम ।
तब आहार आकार को, देवे न करे कम ॥४॥

श्री देवचन्द्र जी ने कान जी भट्‌ट द्वारा बताये ज्ञान के अनुसार से निश्चय कर लिया था कि प्रत्येक मनुष्य के पास मिथ्या तन और सत्य आत्मा है इसलिए वह जब तक आत्मा को आहार, अर्थात् जब तक भागवत की चर्चा सुन नहीं लेते थे तब तक जलपान नहीं करते थे । चर्चा सुनने के बाद ही आकार को पूरा भोजन देते थे ।

Nijanand App